विचार बिन्दु

प्रकृति ईश्वर का प्रकट रूप है, कला मनुष्य का। –लांगफैलो

''प्लास्टिक में लिपटता-सिमटता राजस्थान''

राजस्थान आज एक ऐसे जहर की चपेट में है जो उसकी शान को प्लास्टिक की थैलियों में लपेटकर कचरे के ढेर में बदल रहा है। प्लास्टिक–वही अनजाना मेहमान, जो 1907 में लियो बैकलैंड की प्रयोगशाला में एक भूल का नतीजा था, अब हमारे खून, सांस और थाली में घुस चुका है। लियो ने कहा था, धर्म और विज्ञान में समानता है; अगर ये गलत हाथों में पड़ जाएं, तो आदर्श पीछे छूट जाते हैं, और मानवता का नुकसान होता है। आज उनका यह कथन राजस्थान में साकार हो रहा है, जहां प्लास्टिक दुख, अपराध और पीड़ा का पर्याय बन गया है। आज कोई ऐसा स्थान शेष नहीं बचा है जहां प्लास्टिक का साम्राज्य न हो स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, रेल–बस, मंदिर–मस्जिद, मनोरंजन पार्क, ऑफिस, हवाई अड्डे, सेना, पुलिस, न्यायालय, दुकान और घर सभी क्षेत्रों में यह फैला–पसरा है।

सुजैन फ्रिंकेल ने इसे जहरीली प्रेम कथा कहा था, उसने कहा कि–मैंने एक दिन में 196 प्लास्टिक की चीजों का स्पर्श किया जबकि गैर प्लास्टिक की केवल 106, इसलिए सचमुच, यह प्रेम इतना जहरीला हो गया है कि हमारी हवा, पानी, और डीएनए तक इसके जहर से अछूते नहीं। सरकार की कागजी शेर बन कर रह गई है। सरकार और नागरिकों की सुस्ती ने इस राक्षस को बेलगाम कर दिया है। इस त्रासदी पर अब व्यंग्य नहीं निकलता। आज प्लास्टिक हमारा नया बादशाह बन चुका है।

जयपुर की चहल–पहल भरी गलियों से लेकर जैसलमेर के सुदूर गांवों तक, प्लास्टिक ने ऐसा साम्राज्य कायम किया है कि कोई कोना बाकी नहीं। स्कूलों में बच्चों की किताबें प्लास्टिक कवर में लिपटी हैं, कॉलेजों में नोटबुक्स प्लास्टिक की फाइलों में कैद हैं। अस्पतालों में सलाइन की बोतलें, सिरिंज, और दवाइयों की पैकिंग सब प्लास्टिक। रेलवे स्टेशनों और बस स्टैंडों पर चाय–नाश्ता प्लास्टिक के गिलास और थालियों में। मंदिरों में प्रसाद प्लास्टिक की थैलियों में, मस्जिदों में दान के लिए प्लास्टिक के डिब्बे। मनोरंजन पार्कों में बच्चों के खिलौने, ऑफिसों में पेन, फाइलें, और कुर्सियां सब प्लास्टिक। हवाई अड्डों पर पानी की बोतल से लेकर सामान की पैकिंग तक, सेना के कैंपों में राशन की पैकिंग, पुलिस थानों में फाइलें, और न्यायालयों में दस्तावेजों की फाइलें सब प्लास्टिक। दुकानों में हर सामान प्लास्टिक में लिपटा, और घरों में रसोई से लेकर बाथरूम तक, प्लास्टिक का बोलबाला। तो बात हुई कि हमने प्लास्टिक को अपना नया बादशाह चुन लिया है और हर जगह उसका राजतिलक कर दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2022 तक सिंगल–यूज प्लास्टिक को खत्म करने का वादा किया था, लेकिन राजस्थान में यह कागजी वादा धूल में बदल गया। 2021 में मुख्य सचिव ने वैकल्पिक सामग्रियों की बात की थी और 2025 में सुधांश पंत ने इसे जनस्वास्थ्य का दुश्मन बताया भी। लेकिन जमीनी हकीकत सबको पता है। स्थानीय निकायों में कचरा प्रबंधन का ढांचा इतना जर्जर है कि लगता है, सरकार ने प्लास्टिक कचरे को भी स्वच्छ भारत के बैनर तले छोड़ दिया। राज्य में रीसाइक्लिंग इकाइयां गिनती की हैं, और जो हैं, वो संसाधनों की भूखी हैं और दम तोड़ रही हैं। प्लास्टिक उद्योगों पर सख्ती करें? अरे साहब वह सब तो दूर की कौड़ी! छोटे–मझोले कारखाने बिना किसी नियमन के प्लास्टिक की बरसात कर रहे हैं, और सरकार आंखें मूंदे ताली बजा रही है। यह तो वही बात हुई कि हमने रेगिस्तान में बारिश का इंतजार छोड़कर, प्लास्टिक की बौछारों को ही मानसून मान लिया।

आज राजस्थान की सुनहरी रेत पर प्लास्टिक कचरे का साया मंडरा रहा है। राजस्थान का रेगिस्तान, जो कभी कवियों की प्रेरणा था, आज प्लास्टिक के कचरे का कब्रिस्तान बन रहा है। नदियां, नाले, और तालाब प्लास्टिक से अटे पड़े हैं। जयपुर में मानसून आता है, तो सड़कें नदियां बन जाती हैं, क्योंकि नाले प्लास्टिक के बोझ तले दम तोड़ चुके हैं। माइक्रोप्लास्टिक मिट्टी और पानी में घुसकर खाद्य श्रृंखला को जहर दे रहा है। गाय–भैंसें सड़कों पर बिखरे प्लास्टिक को चबाकर अपनी जान गंवा रही हैं। पशुपालक रो रहे हैं, लेकिन हमारी नींद नहीं टूट रही। प्लास्टिक जलाने से निकलने वाली डाइऑक्सिन और कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी जहरीली गैसें हवा को और जहरीली बना रही हैं। राजस्थान, जहां गर्मी पहले ही जान लेती है, अब इन गैसों के कारण ग्लोबल वार्मिंग की मार और झेल रहा है। 2023 में सूखे ने फसलों को तबाह किया था और प्लास्टिक ने मिट्टी की उर्वरता को और चोट पहुंचाई। उदयपुर की फतेहसागर झील, जो कभी पर्यटकों का दिल थी, आज प्लास्टिक की बोतलों और थैलियों से दम तोड़ रही है। यह तो वही बात हुई कि हमने अपने रेगिस्तान को प्लास्टिक का कैनवास बना दिया, जहां हर रंग जहर भरा है।

स्वास्थ्य के मोर्चे पर तो यह जहर का घूंट है और हर घूंट में प्लास्टिक का जहर अब हमारे खून में बह रहा है। शोध चीख–चीखकर कह रहे हैं कि प्लास्टिक में 16,000 रसायन होते हैं, जिनमें 26% तो सीधे धरती और मानव जीवन को तबाह करने के लिए पर्याप्त है। फेथलेट्स और बिस्फेनॉल ए जैसे रसायन कैंसर, हार्मोनल असंतुलन, और प्रजनन समस्याओं का न्योता दे रहे हैं। जयपुर के कैंसर अस्पताल की निदेशक अनीला कोठारी चिल्ला रही हैं कि प्लास्टिक कैंसर के मामलों को बढ़ा रहा है। डॉ. देवेंद्र सोनी और डॉ. एकलव्य बोहरा ने चेताया कि गर्म पदार्थ प्लास्टिक में रखने से रसायन हमारे डीएनए तक को नुकसान पहुंचा रहे हैं। माइक्रोप्लास्टिक अब हवा, पानी, और खाने में घुस चुका है। एक व्यक्ति हर हफ्ते इतना माइक्रोप्लास्टिक निगल लेता है, जितने से एक क्रेडिट कार्ड बन जाए। तो हम तो जैसे प्लास्टिक के क्रेडिट कार्ड से अपनी सेहत का कर्ज चुका रहे हैं! ग्रामीण राजस्थान की तस्वीर इससे भिन्न नहीं है जहां स्वच्छता और कचरा प्रबंधन की व्यवस्था पूरी तरह लचर है, लोग अनजाने में नहीं जानबूझकर प्लास्टिक में लिपटा खाना खा रहे हैं। भारत में, जहां सोना पहना और खाया जाता है, अब लोग प्लास्टिक खा रहे हैं। यह तो वही बात हुई कि हमने सोने की थाली छोड़कर, प्लास्टिक की थाली में जहर परोस लिया हो।

यूरोपीय संघ की तरह, भारत में सिंगल-यूज प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध को सख्ती से लागू करना होगा। राजस्थान में स्थानीय निकायों को जवाबदेह बनाकर और दुकानदारों पर भारी जुर्माना लगाकर इसे लागू किया जा सकता है। कनाडा की EPR नीति को अपनाकर, कंपनियों को अपने प्लास्टिक कचरे के संग्रह और रीसाइक्लिंग के लिए जिम्मेदार बनाया जा सकता है।

कचरे का वारिस प्लास्टिक बन गया है और सबसे बड़ा पाप हम यह कर रहे हैं कि हम हमारी भावी पीढ़ियों को कचरे का वारिस भी बना रहे हैं। यह सैकड़ों साल तक नहीं सड़ता, यानी आज का कचरा कल के बच्चों के लिए अभिशाप बनेगा ही। राजस्थान में, जहां कृषि और पशुपालन जीवन का आधार हैं, प्लास्टिक मिट्टी को बंजर और पशुओं को कब्रिस्तान भेज रहा है। खेत बंजर हो रहे हैं, फसलें मर रही हैं, और पशुपालक अपनी आजीविका खो रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण अनियमित मानसून और बढ़ता तापमान पहले ही किसानों की कमर तोड़ रहा है, और प्लास्टिक इस आग में घी डाल रहा है। जोधपुर के खेतों में, जहां कभी बाजरे की लहलहाती फसलें थीं, अब प्लास्टिक की शीट्स मिट्टी को दफना रही हैं। राज्य में पशुपालक अपनी गायों को प्लास्टिक खाने से रोक नहीं पा रहे। यह तो वही बात हुई कि हमने अपने बच्चों के लिए सुनहरी रेत की बजाय प्लास्टिक का ढेर छोड़ दिया हो। कल का राजस्थान अगर प्लास्टिक के कचरे में दफन हो गया, तो हमारी पीढ़ी को इतिहास कभी माफ नहीं करेगा। हमारी भावी पीढ़ियां पूछेंगी, क्यों छोड़ा तुमने हमें यह जहरीला वारिस हमारे लिए? और हमारे पास जवाब के नाम पर सिर्फ खामोशी होगी। यह जहर का कारोबार प्लास्टिक उद्योग राजस्थान में बेलगाम घोड़ा बन चुका है। छोटे–मझोले कारखाने बिना किसी नियमन के प्लास्टिक की बरसात कर रहे हैं। गुणवत्ता मानकों की धज्जियां उड़ रही हैं, और पर्यावरण नियम तो जैसे कागज के टुकड़े बनकर हवा में उड़ रहे हैं।

प्लास्टिक कचरा और राजस्थान में बरसात की त्रासदी

राजस्थान, अपनी रंग–बिरंगी संस्कृति और मरुस्थलीय सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध, आज प्लास्टिक कचरे की समस्या से जूझ रहा है। बरसात, जो इस शुष्क प्रदेश में जल संरक्षण और खेती के लिए वरदान है, अब प्लास्टिक कचरे की वजह से शहरों में बाढ़ जैसी स्थिति पैदा कर रही है। जयपुर, जोधपुर, उदयपुर जैसे प्रमुख शहरों में नालियाँ और नाले प्लास्टिक कचरे से अवरुद्ध हो रहे हैं, जिससे बारिश का पानी सड़कों पर ठहर जाता है, जनजीवन अस्त–व्यस्त होता है और बीमारियों का खतरा बढ़ता है। भारत में प्रतिदिन लगभग 26,000 टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है, जिसमें से केवल 8% ही रीसाइकिल होता है। राजस्थान में भी स्थिति गंभीर है, जहाँ शहरी क्षेत्रों में अपर्याप्त कचरा प्रबंधन और जागरूकता की कमी के कारण प्लास्टिक कचरा नालियों को जाम कर देता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार, भारत में प्रति वर्ष लगभग 9.3 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है, जिसमें से 40% अनसंग्रहित रहता है। राजस्थान के शहरों में यह अनसंग्रहित कचरा बरसात के दौरान नालियों में बहकर जल निकासी को रोक कर सड़कों पर जलभराव और बाढ़ जैसे हालात बना रहा है, पर प्रवाह किसे है।

प्लास्टिक कचरे की समस्या केवल जल निकासी तक सीमित नहीं है। यह पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य को भी गंभीर नुकसान पहुँचा रहा है। नालियों में जमा प्लास्टिक मच्छरों के प्रजनन का कारण बन रहा है, जिससे डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियाँ फैल रही है अस्पताल में मरीजों की भीड़ बेकाबू है। इससे निपटने का मूर्खता पूर्ण कारनामा ये है कि प्लास्टिक को खुले में जला कर निस्तारण किया जा रहा है और इस प्लास्टिक से डाइऑक्सिन और फ्यूरान जैसे हानिकारक रसायन निकल रहे हैं, जो वायु प्रदूषण और श्वसन संबंधी रोगों का कारण बन रहे हैं। राजस्थान के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में, विशेष रूप से एकल–उपयोग प्लास्टिक (सिंगल–यूज प्लास्टिक) का उपयोग व्यापक है, जो इस समस्या को और बढ़ाता है।

इस त्रासदी से निपटने के लिए तत्काल और ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। भारत सरकार ने 2016 और 2021 में प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम लागू किए, जिनमें एकल–उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध और विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR) जैसे प्रावधान शामिल हैं। हालांकि, राजस्थान सहित कई राज्यों में इन नियमों का कार्यान्वयन कमजोर है। उदाहरण के लिए, 2023 में 775,577 किलोग्राम प्रतिबंधित एकल–उपयोग प्लास्टिक जब्त किया गया, लेकिन बाजार में इसकी उपलब्धता अभी भी बनी हुई है। समाधान के लिए, स्थानीय निकायों को कचरा पृथक्करण और रीसाइक्लिंग सुविधाओं को मजबूत करना होगा। राजस्थान के कलडवास पंचायत में दरवाजे–दरवाजे कचरा संग्रहण की सफल प्रणाली एक मॉडल हो सकती है। साथ ही, जन जागरूकता अभियान और स्कूलों में पर्यावरण शिक्षा पर जोर देना होगा। कपड़े की थैलियों और बायोडिग्रेडेबल विकल्पों को प्रोत्साहन देना भी आवश्यक है। राजस्थान की यह धरती, जो कभी स्वच्छता की मिसाल थी, आज हमसे सामूहिक जिम्मेदारी माँग रही है। यदि हम अभी नहीं जागे, तो हर बरसात यही कहानी दोहराएगी। प्लास्टिक कचरे को नियंत्रित कर, हम अपने शहरों को बाढ़ से बचा सकते हैं और इस धरती को फिर से हरियाली से सजा सकते हैं।

सरकार की चुप्पी इस बात का सबूत है कि आर्थिक लाभ को जनस्वास्थ्य और पर्यावरण से ऊपर रखा जा रहा है। भारत में सिर्फ 25% प्लास्टिक कचरे की रीसाइक्लिंग होती है, और राजस्थान में यह आंकड़ा और भी शर्मनाक है। मात्र 10 प्रतिशत प्लास्टिक कचरे की ही रिसाइक्लिंग हो रही है बाकी कचरा या तो लैंडफिल में दफन हो रहा है या खेतों–नदियों में बिखर रहा है। यह तो वही बात हुई कि हमने जहर का कारोबार शुरू कर दिया, और ग्राहक हमारी सेहत और पर्यावरण हैं। प्लास्टिक से निपटने के लिए कपड़े का थैला या रीसाइक्लिंग बढ़ाओ जैसे पुराने नुस्खे अब बेकार हैं। हमें आधुनिक विज्ञान की शरण लेनी होगी। बायोडिग्रेडेबल पॉलिमर और एंजाइम–आधारित प्लास्टिक विघटन तकनीकें इस दिशा में क्रांति ला सकती हैं। फ्रांस में विकसित एक एंजाइम, जो पीईटी प्लास्टिक को घंटों में विघटित कर देता है, राजस्थान में लागू हो सकता है। सरकार को अनुसंधान संस्थानों और स्टार्टअप्स के साथ मिलकर ऐसी तकनीकों को बढ़ावा देना चाहिए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) इस जंग में हमारा सबसे बड़ा हथियार हो सकता है। स्मार्ट डस्टबिन, जो कचरे को स्वचालित रूप से छांट सकें, और ड्रोन, जो कचरे के ढेर को ट्रैक करें, जयपुर और उदयपुर जैसे शहरों में गेम–चेंजर साबित हो सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र मोहन शर्मा, (साहित्यकार, चिन्तक एवं शिक्षाविद्)

यूरिया खाद की किल्लत, प्रागपुरा ग्राम सेवा सहकारी समिति में किसानों की भीड़ लगी

एक घंटे में यूरिया की गाड़ी खाली हुई, पुलिस निगरानी में खाद वितरित किया

पावटा, (निसं)। प्रागपुरा ग्राम सेवा सहकारी समिति कार्यालय पर शुक्रवार को यूरिया खाद की गाड़ी आने की सूचना पर किसानों की लंबी कतार लग गई। क्षेत्र में बारिश होते ही यूरिया की मांग बढ़ गई है, जिसकी वजह से किसान घरेलू कामकाज भी छोड़कर सुबह से खाद बिक्री केंद्र पर पहुंचने शुरू हो जाते हैं। इनमें महिला किसान भी शामिल हैं, जो घर का कार्य छोड़कर यूरिया के लिए लाइनों में लगने को मजबूर हैं।

अकेले प्रागपुरा की आबादी करीब 25 हजार है और आसपास के क्षेत्र के लोग भी यहां खाद लेने पहुंच रहे हैं। जिसके चलते अभी और भी ज्यादा यूरिया खाद की कमी है। वर्तमान में खेतों में उग रही बाजरे की फसल के लिए किसानों को खाद की जरूरत है, लेकिन यूरिया की कई दिनों से किल्लत चल रही है।

प्रागपुरा जीएसएस अध्यक्ष उपेन्द्र सिंह शेखावत ने बताया कि शुक्रवार की सुबह करीब दस बजे यूरिया खाद की एक गाड़ी आई, जिसमें यूरिया खाद के 900 कट्टे थे। उन्होंने बताया कि प्रागपुरा सहकारी समिति में इस खरीफ सीजन में 7000 कट्टे डीएपी

प्रागपुरा ग्राम सेवा सहकारी समिति कार्यालय पर यूरिया खाद की गाड़ी आने की सूचना पर किसानों की लंबी कतार लग गई।

बाजरा बुवाई के लिए व इसी खरीफ फसल के लिए यूरिया खाद के अभी तक 19500 कट्टे उपलब्ध करवाये गये हैं। उपेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि किसान हित में समिति द्वारा अधिकारियों से सम्पर्क कर क्षेत्रवासियों की आपूर्ति के लिए निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि यूरिया खाद सरकारी दर 266.50 पर उपलब्ध करवाया जा रहा है।

मुख्य कार्यकारी कैलाश चंद स्वामी ने बताया कि खाद केंद्र पर खाद की सीमित उपलब्धता और किसानों की अधिक भीड़ के कारण एक आधार कार्ड से केवल दो बैग यूरिया के दिए गए, जिस कारण उन किसानों को सबसे अधिक समस्या का सामना करना पड़ा, जिन्हें दो से अधिक यूरिया बैग की आवश्यकता थी।

किसानों ने बताया कि यूरिया खाद की कमी के कारण उन्हें काफी परेशानी हो रही है। वे सुबह से लाइनों में लगकर खाद लेने के लिए आते हैं,

■ किसान घरेलू कामकाज भी छोड़कर सुबह से खाद बिक्री केंद्र पर पहुंचने शुरू हो जाते हैं, इनमें महिला किसान भी शामिल हैं

लेकिन कई बार उन्हें निराश होकर लौटना पड़ता है।

उपेन्द्र सिंह शेखावत ने किसानों की समस्याओं को समझते हुए कहा कि वे अधिकारियों से बात कर खाद की उपलब्धता बढ़ाने का प्रयास करेंगे, ताकि किसानों को परेशानी न हो। उन्होंने कहा कि समिति का प्रयास है कि किसानों को समय पर खाद मिले और उनकी फसल अच्छी हो। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए प्रागपुरा थाना पुलिस तैनात रही जिनकी निगरानी में खाद का वितरण सुबह शुरू हुआ। पुलिसकर्मी व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगातार मशक्कत करते रहे लेकिन फिर भी कई किसानों को घंटों इंतजार करना पड़ा।

'सरकारी जागरूकता व जन भागीदारी के बिना स्वच्छता को जन आंदोलन बनाना संभव नहीं'

के.के. गुप्ता ने राष्ट्रीय स्वच्छता सर्वेक्षण में लगातार पांचवीं बार पुरस्कार जीतने के लिए डूंगरपुर नगर परिषद की टीम और डूंगरपुर शहर वासियों को शुभकामनाएं दी

उदयपुर/ डूंगरपुर, (निसं)। राष्ट्रीय स्वच्छता सर्वेक्षण में लगातार पांचवीं बार पुरस्कार जीतकर और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन का शहर बन दक्षिण राजस्थान के आदिवासी अंचल का ऐतिहासिक डूंगरपुर नगर पूरे भारत में चर्चित हो रहा है। राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन (ग्रामीण) के राजस्थान प्रदेश समन्वयक और डूंगरपुर नगर परिषद के पूर्व सभापति के.के. गुप्ता ने राष्ट्रीय स्वच्छता सर्वेक्षण में लगातार पांचवीं बार पुरस्कार जीतने के लिए डूंगरपुर नगर परिषद की टीम और डूंगरपुर शहर वासियों को अपनी बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनके कार्यकाल में नगरवासियों के सहयोग से उन्होंने स्वच्छता का जो पोधा रौपा था, आज वह वटवृक्ष बनकर फल दे रहा है।

जानकारी के अनुसार गुरुवार को नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कम आबादी वाले शहरों की श्रेणी में सुपर लीग सिटी पुरस्कार से सम्मानित किया है। गुप्ता ने कहा कि डूंगरपुर और इंदौर की तरह स्वच्छता के लिए हर शहरवासियों को स्वच्छता को जन आंदोलन बनाना चाहिए। शहर का कोई व्यक्ति खुले में कचरा ना डालें, 365 दिन नियमित गीला एवं सूखा कचरा अलग–अलग टाइम बाउंड उठना चाहिए तथा शहर का छोटा हो या बड़ा व्यक्ति को स्वच्छता की ताकत को समझना चाहिए वह स्वयं तो कचरा न डाले परंतु आमजन को भी खुले में कचरा ना डालने दें, यह विजन पैदा करने की आवश्यकता है। यह कार्य डूंगरपुर वासियों एवं शहर में पढ़ने वाले 22373 बच्चों ने पूरे देश को करके दिखाया है। यहां यह भी आवश्यक है कि जनसंख्या

के.के. गुप्ता

स्वच्छता को प्रभावित नहीं करती है। आज राजस्थान में डूंगरपुर से भी छोटी निकाय एवं मध्य प्रदेश की इंदौर निकाय जिसकी जनसंख्या 28.71 लाख होने के बाद भी देश के लिए लगातार स्वच्छता सर्वेक्षण में अव्वल आना कोई साधारण बात नहीं है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा बार–बार स्वच्छता का संदेश तथा ताकत का वर्णन करना किसी विकसित देश के हर नागरिक को सोचने को मजबूर करता है। 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी की जयंती पर राजघाट पर यह करना कि देश का हर नागरिक सोच ले कि मुझे हिंदुस्तान को स्वच्छ बनाना है तो दुनिया की कोई ताकत देश को गंदा नहीं कर सकती। न गंदगी करेंगे नहीं करने देंगे तथा इसे राष्ट्रवापी आंदोलन बनाना है। उन्होंने हर सप्ताह 2 घंटे तथा प्रतिवर्ष 100 घंटा स्वच्छता के लिए कार्य करने का आग्रह किया। शौचालयों के निर्माण करवाने तथा व्यवहार भी बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया तथा महिलाओं को दिया सम्मान उन्हें सुरक्षा और गरिमा मिलने लगी।

गुप्ता ने कहा है कि जो शहर स्वच्छता में सम्मानित हुए हैं उनके अंदर भारी उत्साह एवं उमंग है और कुछ शहरों में स्वच्छता सर्वेक्षण में आगे आने का उत्साह है। आज की परिस्थितियों में वास्तव में देखा जाए तो एक बात सत्य है अधिकारी सोचता है मैं क्यों मेहनत करूं मेरा पता नहीं कब ट्रांसफर हो जाए, जनप्रतिनिधि सोचता है मैं 5 साल के लिए हूं बाद में मेरा क्या ठिकाना में क्यों मेहनत करूं। परंतु वह यह भूल जाता है कि स्वच्छता की ताकत को कभी नजरअंदाज नहीं जा सकता, परन्तु यह वह सत्य है स्वच्छता को जीवन भर याद रखा जाता है। गुप्ता ने कहा कि भारत में स्वच्छता में इमरजेंसी को लागू करने की भी आवश्यकता है।

स्कूल में बच्चों से मजदूरी कराने का मामला सामने आया

भीलवाड़ा, (निसं)। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पुरावतों का आकोला में स्कूल में बच्चों से मजदूरी कराने का मामला सामने आया है। मजदूरी करते बच्चों का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है।

वीडियो में देखा जा सकता है कि तीन बच्चे मजदूरी कर रहे हैं सरकारी स्कूल की बच्चे यूनिफॉर्म पहने है और आम सड़क पर छोटे–छोटे बच्चों से मिस्त्री और मजदूरी का काम करवाया जा रहा है। आकोला विद्यालय में पढ़ाई के समय स्कूल के यह बच्चे पढ़ने–लिखने के बजाय कुदाल और फावड़ा

■ मजदूरी करते बच्चों का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ

लेकर सीमेंट से मसाला तैयार कर मजदूरी कर रहे हैं। ग्रामीणों ने जब बच्चों से बात की तो उन्होंने बताया कि हम घर से पढ़ने के लिए स्कूल आए थे फिर प्रार्थना के बाद मिस्त्री के साथ तीन बच्चों को भेज दिया बोला कि इन काम में हैल्प करो तभी से इनके साथ काम में लगे हैं।

मामला सामने आने के बाद प्रधानाध्यापक महेंद्र सिंह ने बताया कि हमारे एक जुलाई से पानी की समस्या बनी हुई है और हमारे विद्यालय में 201 बच्चों का नामांकन है और पानी नहीं होने से इन बच्चों का खाना बनाना मुश्किल हो रहा है। उन्होंने बताया कि इसमें से एक बच्चा खुद मित्री का हो सकता है, इसलिए उसे बुलाया हो और बाकी उसके साथ काम में सहायता के लिए गए हो।

5 स्कूल के बच्चे पढ़ने–लिखने के बजाय कुदाल और फावड़ा लेकर सीमेंट से मसाला तैयार कर मजदूरी कर रहे हैं।

समदरिया गांव के बच्चों को नदी पार कर जाना पड़ता है स्कूल

पाली, (निसं)। पाली जिले के सोजत उपखंड के गुढ़ा कल्ला के समदरिया गांव और डांडिया मगरी गांव के बीच बहने वाली नदी हर साल बारिश में इन गांवों के लिए एक बड़ी रुकावट बन जाती है।

लोगों के अनुसार स्कूल जाने का एकमात्र रास्ता इसी नदी से होकर गुजरता है। जब नदी पूरे उफान पर होती है, तो बच्चों का स्कूल जाना तो दूर, आम लोगों का आना–जाना भी खतरनाक हो जाता है। यही वजह है कि बरसात के दिनों में अक्सर बच्चों को स्कूल से छुट्टी करनी पड़ती है, जिससे उनकी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ रहा है। यह कोई नई समस्या नहीं है। सालों से स्थानीय ग्रामीण,

■ हर साल बारिश में इन गांवों के लिए एक बड़ी रुकावट बन जाती है नदी

जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों से पुल बनाने की गुहार लगा रहे हैं। सांसद, विधायक और अधिकारी सभी इस स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ हैं, लेकिन उनकी अपीलें और वादे सिर्फ कागजों तक ही सिमट कर रह गए हैं। लोगों के अनुसार हर साल बारिश आती है, नदी उफनती है, बच्चे अपनी जान जोखिम में डालते हैं, और फिर बारिश के साथ यह मुद्दा भी कहीं दब जाता है।

राशिफल शनिवार 19 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, भरणी नक्षत्र रात्रि 12:37 तक, शूल योग रात्रि 12:35 तक, गर करण दिन 2:43 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कर्क चन्द्रमा–मेष, मंगल–सिंह, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–वृष, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज भद्रा रात्रि 1:28 से आरम्भ होगी। महापात योग दिन 2:16 से सायं 7:10 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:29 से 9:10 तक, चर 12:33 से 2:14 तक, लाभ–अमृत 2:14 से 7:36 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:48, सूर्यास्त 7:18

मेष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

वृष
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। सुख–सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

मकर
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। व्यावसायिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

कुंभ
परिवार में शुभ–मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। परिजनों/मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।